Deg-2
HB (H) P-III

गुजरात, राजस्थान का विस्तार ①

गुजरात →

तुर्क लोग गुजरात को ~~लि~~ जीतने का प्रयास गजनवियों के समय से ही करते चले आ रहे थे, किन्तु इनके प्रयासों को गुजरात के चालुक्य शासक विफल करते रहे थे। बाद में मुहम्मद गौरी ने अहिल्वाड़ा पर आक्रमण किया और उस पर कब्जा भी कर लिया, ~~किन्तु~~ वह अधिक समय तक उसके अधिकार में नहीं रह पाया। पर गुजरात का महत्व ~~इ~~ इतना अधिक था कि तुर्क लोग दीर्घ काल तक उसकी उपेक्षा नहीं कर सके। यह न केवल एक उपजाऊ और आबाद प्रदेश था, अपितु हस्त-शिल्प उत्पादन और ~~विशेष~~ केन्द्र भी था। विशेषकर कपड़ा उत्पादन का एक इसकी समृद्धि के कारण वहाँ के शासकों ने अपने पास बहुत भारी परिमाण में सोना और चाँदी एकत्र कर रखा था। गुजरात के प्रति दिल्ली के सुल्तानों की लालची दृष्टि का एक अन्य कारण यह था कि मध्य और पश्चिम एशिया पर मंगोलों के प्रभुत्व और भारत पर उनके निरंतर हो रहे आक्रमणों के कारण मध्य एशिया और ईराक से घोड़ों की आपूर्ति कम हो गई थी। गुजरात पर नियंत्रण कर लेने से अरबी, ईराकी और तुर्क प्रजातियों के घोड़ों की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित हो सकती थी जिनकी दिल्ली सल्तनत की सेना के लिए अत्यधिक आवश्यकता थी। अतः दिल्ली सुल्तानों को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए किसी बहाने की आवश्यकता नहीं थी। 1299 ई० में अलाउद्दीन ने अपने दो सिपहसालार उलुग खान और नुसरत खान को गुजरात के विरुद्ध

P. T. O —

एक अभियान का नेतृत्व करने का आदेश दिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि तुर्कों को कहीं भी किसी और गंभीर प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ता था। कर्ण ने हाल ही में राजगद्दी प्राप्त की थी और एक नये राजवंश की स्थापना की थी। अपने कुकृत्यों के कारण कर्ण को अधिक स्थानीय समर्थन प्राप्त नहीं था। अपनी राजधानी से भागने के बाद कर्ण ने दक्षिण, गुजरात में बगलाना पर अपना नियंत्रण बनाए रखा जहां तुर्कों ने कुछ समय तक उसे परेशान नहीं किया। गुजरात का शेषभाग तुर्कों के नियंत्रण में चला गया।

राजस्थान →

गुजरात को अपने शासन के अधीन लाने के बाद अलाउद्दीन के लिए यह आवश्यक हो गया कि राजस्थान, मालवा पर भी वह अपना नियंत्रण कायम करे ताकि गुजरात के साथ उसका सम्पर्क सुरक्षित रहे। 1301 ई० में अलाउद्दीन ने गुजरात के विजेताओं उलुग खान और नुसरत खान को रणथम्भौर पर चढ़ाई करने का आदेश दिया। किले की घेराबंदी की गतिविधियों के निरीक्षण के दौरान नुसरत खान किले के इतने निकट पहुंच गया कि मारा गया।

ऐसी स्थिति में अलाउद्दीन के लिए रणथम्भौर की ओर स्वयं जाना आवश्यक हो गया। वहाँ पहुंचकर उसने किले ~~को~~ की ~~कुचलने के बाद उसने रणथम्भौर की ओर कूच किया~~ जबरदस्त घेराबंदी कर दी। किले के भीतर भोजन और पानी की भारी कमी हो गई। इस युद्ध में मंगोलों ने राजपूतों

P.T.O.

के साथ किले से बाहर निकलकर लड़ाई की और उन्हीं की तरह वीरगति को प्राप्त हुए।
रणथम्भौर के बाद चित्तौड़ की बारी आई। चित्तौड़ भी राजस्थान के सर्वाधिक मजबूत किलों में से एक माना जाता था। छः महीने की घेराबंदी के बाद रतन सिंह किले से बाहर आ गया और उसने आत्म समर्पण कर दिया।
चित्तौड़ पर तुर्क नियंत्रण स्थापित हो जाने के बाद मारवाड़ और दूसरी राजाओं समेत राजस्थान के अधिकांश राजाओं ने दिल्ली सल्तनत का आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार दस वर्षों में ही समस्त राजस्थान पर तुर्क आधिपत्य स्थापित हो गया।

अलाउद्दीन खिलजी सल्तनत का पहला सुल्तान था जिसने राजपूतों के प्रति एक ऐसी नीति की बुनियाद डाली जिसमें पारस्परिक हितों की मान्यता को आधार बनाया गया था।

Scanned with CamScanner